प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 14 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पाचवीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत ''सामाजिक समरसता एवं सन्त समाज'' संगोष्ठी में मुख्य वक्ता माननीय बासव राज पाटिल, पूर्व सांसद ने कहा कि जो सकल जीवात्मा को प्यार करते है वहीं सन्त है। जो सभी जीवों को एक साथ सम्मान दे वहीं सन्त है। जाति- पाँति से ऊपर उठकर सभी मानव को समानता का भाव दें वही सन्त है। जो विपरीत परिस्थितियों में भी सामाजिक भावना को न छोड़े वहीं सन्त है। समर्थ गुरू रामदास, तुकाराम, रामानुजाचार्य, पुरन्दरदास, रामानन्द, मीराबाई, कबीर, रविदास, सन्त रामसुखदास, महन्त दिग्विजयनाथ, महन्त अवेद्यनाथ जैसे सन्तों ने सामाजिक समरसता के लिए ना केवल स्वंय आगे आये बल्कि अपने जीवन में समरसता का भाव जगाये रखे तथा औरों को भी समरस होने की प्रेरणा दी। भारत में सामाजिक समरसता यदि कायम है तो इसका सम्पूर्ण श्रेय सन्त समाज को जाता है। गोरक्षपीठ तो अपने सामाजिक समरसता के लिए विश्व पटल पर जाना जाता है। देश की सभी समस्याओं के समाधान का मूल सामाजिक समरसता में निहित है। हम उस आध्यात्मिक संस्कृति के वारिस है जिसने कण-कण में परमात्मा का वास तथा सभी प्राणियों में उसी परमात्मा का अंश माना है। ऐसे में जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद सहित नारी-पुरुष, अमीर-गरीब, ऊँचनीच जैसे भेदभाव हमारी संस्कृति का हिस्सा नही हो सकता। हम समरसता की शिक्षा परिवार से ही सीखते है। सामाजिक समरसता में ही हमारी संस्कृति का प्राण बसता है। सामाजिक समरसता के बगैर भारतीय संस्कृति अधूरी एवं मृत प्रायः है। वनवासियों, गृहवासियों से हमें सामाजिक समरसता का मंत्र सीखना होगा, वनवासियों, गिरिवासियों में आज भारत की सांस्कृतिक परम्परा जीवित है और वहां समाज का हर व्यक्ति एक दूसरे का पूरक है। उन्होंने आगे कहा कि दैनन्दिनि जीवन में जो समाज गो-ग्रास निकालता हो, पक्षियों का दाना खिलाता हो, चीटियों का आटा खिलाता हो वह समाज अपनो को ही अछुत कैसे मान सकता है। ऐसे में महापुरूषों की यह वाणी हमारे लिए वरैण्य है कि यदि छुँआछूत यदि पाप नही है तो दुनिया में कुछ भी पाप नही।

मुख्य अतिथि जूनागढ़, गुजरात से पधारे महन्त शेरनाथ जी महाराज ने कहा कि दुनिया की श्रेष्ठतम हिन्दू संस्कृति, श्रेष्ठतम हिन्दू जीवन पद्धति एवं श्रेष्ठतम् सामाजिक व्यवस्था में जाति के आधार पर ऊँच-नीच की भावना और छुआछूत एक कोढ़ है। धार्मिक संकीर्णता भी हमारे समाज को रूढ़िगत बनाता है। देश के सन्त-महात्मा एवं धर्माचार्य तो स्वतंत्रता के बाद से ही सामाजिक समरसता का अभियान छेड़ दिया। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने तो इस विषय पर व्यापक जनजागरण का अभियान चलाया। उन्होनें कहा कि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वाहक है। हिन्दू संस्कृति तो कण-कण में भगवान का दर्शन कराती है। जहाँ अद्वैत वेदान्त का दर्शन गूंजा, उस संस्कृति में छुआछूत एवं धार्मिक संकीर्णता जैसी अमानवीय रूढ़िगत व्यवस्था की स्वीकृति कैसे की जा सकती है। हिन्दू समाज में छुआछूत, उॅच-नीच, अमीर-गरीब, नारी-पुरूष जैसे किसी भी विषमता को कोई स्थान नही है और न ही ये शास्त्र सम्मत है। हिन्दू समाज अपनी संस्कृति के शाश्वत पक्षों को

पहचाने, संस्कृति को स्वीकारे और सामाजिक विकृति की त्याग करें। भारत माता का हर वह पुत्र जो भारतीय परम्परा का वाहक है वह एक समान है, एक जैसा है, न कोई ऊँचा है न कोई नीचा है।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि 'छुआछूत मिटाओं और देश बचाओ' का मंत्र फूंकना होगा। छुआछूत की भावना और धार्मिक संकीर्णता से हिन्दू समाज कमजोर होता है, राष्ट्र कमजोर होता है। सामाजिक समरसता को व्यवस्था परिवर्तन का हिस्सा बनाना होगा और सामाजिक समरसता अभियान के लिए शिक्षण संस्थाओं को आगे आना होगा। हिन्दू समाज में उँचनीच, छुआछूत, नारी-पुरूष जैसी विषमताओं का कोई स्थान नही है। सनातन हिन्दू धर्म ने कभी भी सामाजिक विषमता को स्थान नही दिया। सनातन धर्म की आर्ष परम्परा के ग्रन्थों के अनेक मंत्रों एवं अनेक ग्रन्थों की रचना उन्होंने की जिन्हे बाद में समाज में अछूत मान लिया गया। हमारे यहाँ वर्ण व्यवस्था थी किन्तु छुआछूत नही था। छुआछूत मध्यकाल के मुस्लिम शासन काल की देन है। मुस्लिम काल में हिन्दू समाज में अनेक विकृतियां उत्पन्न हुई और कालान्तर में वे रूढ़िग्रस्त हो गई। किन्तु अब समय आ गया है कि हमें समतायुक्त, शोषणमुक्त समाज की रचना करना चाहिये। भारत में सामाजिक विषमता की विषबेली विकसित हुई तो भगवान बुद्ध से रमणि महर्षि, स्वामी रामानन्द, नाथ पंथ की पूरी परम्परा, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और ब्रह्मलीन युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज तथा ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज तक की महात्माओं, संतो की ऐसी परम्परा मिलती है जो सदा इसके खिलाफ संघर्ष करते रहे हैं। भारत मे धर्मगुरुओं की एक श्रेष्ठ परम्परा रही है जो संस्कृति में आई विकृति के खिलाफ सदा लड़ते रहे है। छुआछूत के खिलाफ भारत में जारी संघर्ष का नेतृत्व आज भी गोरक्षपीठ कर रहा है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है भारत मानवता की भूमि है। भारत देवभूमि है और भारत एक समरस, संवेदनशील और सभी में एक ही परमात्मा का अंश मानने वाले दर्शन की भूमि है। अतः कालान्तर में आयी छुआछूत जैसे विकृति का भारतीय समाज में होना एक अभिशाप है। उन्होंने आगे कहा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक करने का योगी आदित्यनाथ जी जो प्रयास कर रहे है, देश का सन्त समाज उनका नेतृत्व स्वीकार करता है। हम सभी हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर भारत में एक ही जाति की स्थापना में लगे है, वह हिन्दू जाति होगी।

अध्यक्षता कर रहे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0सिंह ने कहा कि हिन्दू समाज को अपने व्यवहार से यह सिद्ध करना होगा कि हम दुनिया के श्रेष्ठतम समाज की पुनर्स्थापना में सक्षम है। दुनियां में भौतिकता और आतंक से कराह रही 'मानवता' भारत की ओर अपेक्षा भरी नजरों से देख रही है। सत्य सनातन हिन्दू संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा से ही मानवता की रक्षा सम्भव है। अतः हिन्दू समाज अपने समाज की विकृतियों को दूर करें और राजनीतिक षड्यंत्रों को समझें। हिन्दू समाज को यदि जीवित रहना है तो छुआछूत को समाप्त करना ही होगा। गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जीवनभर सामाजिक समरसता की पुर्नप्रतिष्ठा हेतु जूझते रहे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज तो अष्ठभुजी दुर्गा के आठों हाथों के हिन्दु समाज के चारों वर्णों का सयुक्त हाथ मानते थे।

विशिष्ट वक्ता उ0प्र0 उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज के अध्यक्ष प्रो0 ईश्वर शरण विश्वकर्मा जी ने कहा कि राष्ट्रीय एकता-अखंडता और आधुनिक भारत के निर्माण हेतु आवश्यक है समरस अथवा छुआछूत विहीन समाज की रचना। गुरु गोरक्षनाथ ने छुआछूत के खिलाफ हजारो वर्ष पहले सामाजिक क्रान्ति का उद्घोष किया था। आज भी गोरक्षपीठ सामाजिक क्रान्ति की उस परम्परा को आगे बढ़ाने में लगी हुई है। भेदभाव और छुआछूत भारत की संस्कृति नहीं विकृति है। उन्होंने आगे कहा कि हर देश का एक राष्ट्रीय समाज होता है। भारत का राष्ट्रीय समाज हिन्दू समाज है। राष्ट्रीय समाज जब कमजोर होता है तो राष्ट्र कमजोर होता है। राष्ट्र समाज का जब पतन होता है तो राष्ट्र का पतन होता है। भारत की गुलामी और पतन के लिए वाहय एवं विदेशी ताकते जितनी जिम्मेवार है है उससे कम जिम्मेवार हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्था नही है। 'मुझे मत छूओ' अर्थात् छुआछूत की भावना से भारत का राष्ट्रीय समाज कमजोर हुआ। हमारे धर्माचार्यो ने सामाजिक समरसता के निरन्तर प्रयास किये है। गुरू गोरखनाथ, शंकराचार्य, रामानन्दाचार्य से लेकर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज और गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में धर्माचार्यो ने हिन्दू समाज की इस सामाजिक कोढ़ के खिलाफ अनवरत शंखनाद फूॅका है। हिन्दू समाज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु एक होकर अपने समाज की रूढ़ियों के खिलाफ खड़ा हो।

कटक उड़ीसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी महाराज, हरिद्वार से पधारे महन्त शान्तिनाथ जी, अयोध्या से पधारे महन्त धर्मदास जी, श्रीगोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, बड़ौदा से पधारे महन्त गंगादास जी महाराज, श्री बड़ेभक्तमाल अयोध्याधाम से पधारे श्री अवधेशदास जी महाराज, देवीपाटन मन्दिर, तुलसीपुर से पधारे महन्त श्री मिथलेशनाथ जी, तपसीधाम हरैया बस्ती से पधारे स्वामी जयबक्शदास जी महाराज, अयोध्या से पधारे महन्त श्री राममिलनदास जी, चचाईमठ के महन्त श्री पंचाननपुरी जी आदि लोग मंच पर थे।

मुख्य अतिथि जूनागढ़, गुजरात से पधारे महन्त शेरनाथ जी महाराज एवं मुख्य वक्ता माननीय बासव राज पाटिल, पूर्व सांसद का उत्तरीय एवं स्मृति ग्रन्थ के साथ सम्मान देवीपाटन शक्तिपीठ, तुलसीपुर बलरामपुर के महन्त मिथलेशनाथ जी के द्वारा किया गया।

समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, वैदिक मंगलाचरण एवं गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। महाराणा प्रताप महिला पी0जी0 कालेज, रामदत्तपुर गोरखपुर की प्राचार्या डॉ. सरिता सिंह एवं महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कालेज, रामदत्तपुर की प्रधानाचार्या श्रीमती वन्दना त्रिपाठी एवं महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कालेज जंगल धूसड़ के प्रधानाचार्य श्री संदीप कुमार एवं अन्य शिक्षकों ने माल्यार्पण के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह ने किया। इस अवसर पर धीरज सिंह हरीश, वरिष्ठ समाजसेवा अरूणेश शाही, रणजीत सिंह, राजेश सिंह, डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी, श्री पाटेश्वरी सिंह, विजय कुमार सिंह, रोहित मिश्र आदि लोग उपस्थित थे।